दिनांक :- 23-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ॰ फ़ारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

इकाई :- तृतीय

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- गुप्त काल

समुद्रगुप्त ने पाँच चरणों में अपना विजय अभियान पुरा किया - प्रथम चरण में समुद्रगुप्त ने गंगा-यमुना दोआब के राज्यों को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया जिनमें अहिच्छत्र के शासक अच्युत देव, पद्मावती के शासक नाग सेन तथा विदिशा के शासक गणपतिनाग प्रमुख थे. इस युद्ध को आर्यावर्त का प्रथम युद्ध कहा गया है क्योंकि अभियान से निवृत होने के पश्चात समुद्रगुप्त ने उत्तर

भारत मे पुनः एक युद्ध किया इसे आर्यावर्त का दूसरा युद्ध कहा गया है। इस बार उसने समूचे राज्य का उन्मूलन कर दिया। यह नीति दक्षिण में अपनाई गई ग्रहण मोक्ष नीति के विपरीत थी। माना जाता है कि समुद्रगुप्त की इस कठोर नीति का वजह थी कि उसकी अनुपस्थिति मे इन राज्यो ने स्वतंत्र होने की कोशिश की थी।

प्रयाग प्रशस्ति के इक्कीसवीं पंक्ति मे आर्यावर्त के आठ राजाओ का उल्लेख हुआ है परंतु उनके राज्यो के नाम नही दिये गए हैं। उपरोक्त वर्णित राजा के नाम है

1. रुद्रदेव 2. मत्तिय 3. नागदत्त 4. चन्द्रवर्मा
5. गणपतिनाग 6. नागसेन 7. अच्युत 8. बलवर्मा

द्वितीय चरण में उसने पूर्वी हिमालय के राज्य और कुछ सीमावर्ती (प्रत्यन्त) राज्य जैसे बंगाल (समतट) असम (डवाक) कामरूप कर्तृपुर, नेपाल आदि को जीता। इसी

Scanned with CamScanner

चरण में उसने पंजाब, मालवा, राजस्थान में फैले नौ गणराज्यों को पराजित किया। इनके नाम निम्नांकित हैं: मालवा, अर्जुनायन, यौधेय, मद्रक, आभीर, प्रार्जुन सनकानिक, काक, खरपारिक आदि। अभिलेखों में इस वृद्धि को प्रसभोद्धरण कहा गया है।

तृतीय चरण में उसने आटविक राज्यों को पराजित किया प्रयाग प्रशस्ति की इक्कीसवीं पंक्ति में ही आटविक राज्यों की चर्चा है। माना जाता है कि ये आटविक राज्य उत्तर प्रदेश के गाजीपुर से मध्य प्रदेश के जबलपुर में किसी खास आटविक राज्य उसके शासक का नाम नहीं मिलता बल्कि लिखा गया है कि सभी आटविक राज्यों को सेवक बना लिया गया।

चतुर्थ चरण में दक्षिण भारत का अभियान किया जिन में पल्लव विष्णु गोप सहित 12 राज्यों के संघ

Scanned with CamScanner

को पराजित किया! अन्य राज्य निम्नांकित है।

कोसल शासक : महेन्द्र कस्थल पुरशासक : धनंजय

देवराष्ट्र शासक : कुबेर महाकांतर शासक : व्याघ्रराज

पिष्टपुरी शासक : महेन्द्रगीरी कौशल शासक - मण्टराज

कोट्टूर शासक : स्वामीदत्त एरण्डपल्ल शासक : दमन

अवमुक्त का शासक - नीलराज वेंगी शासक - हस्तिवर्मा

पालक्क शासक : उग्रसेन

समुद्रगुप्त की दक्षिण विजय तीन नीतियों पर आधारित थी।

(1) ग्रहण - शत्रु पर पूर्ण विजय (2) मोक्ष - जीतकर शत्रु को मुक्त करना (3) अनुग्रह - विजयोपरांत पुनः राज्य लौटाना

दक्षिण की विजय को गुप्त अभिलेख में धर्म विजय कहा गया है।

पाँचवे चरण मे समुद्रगुप्त ने कुछ विदेशी राज्यो को पराजित किया। इसमें उसने शक और कुषाण को पराजित किया।

समुद्रगुप्त का सामकालीन शक शासक रूद्रसिंह तृतीय था।

Scanned with CamScanner

अभी भी सिंधु नदी के पास छोटा सा कुषाण राज्य था जो किदार कुषाण के वंशजो का राज्य था तथा वहाँ का शासक दैवपुत्रषाहिषाहानुषाहि उपाधि धारण करता था। विदेशी राज्यो ने तीन प्रकार से समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार की। ① आत्मनिवेदन : दरबार मे स्वंय उपहार सहित हाजिर होना

② कन्योपायन : राजकुमारी अर्पित करना।

③ गरुत्मदंकित : गुप्त की गरुड़ अंकित मुद्राओ को अपने देश में चलाना। चीनी स्त्रोत से ज्ञात होता है कि समुद्रगुप्त से श्रीलंकाई शासक मेघवर्ण ने गया मे एक बौद्ध मठ बनाने की अनुमति मांगी। इसके लिये समुद्रगुप्त के दरबार मे उसने एक दूत मंडल भेजा। अनुमति के पश्चात उसने महाबोधि संघाराम बिहार का निर्माण किया।

Scanned with CamScanner

अपने विजय अभियान को पूरा करने के पश्चात समुद्र गुप्त ने प्रयाग प्रशस्ति लिखवाई तथा अश्वमेध यज्ञ किया है और अश्वमेध प्रकार के सिक्कों को जारी किया। इस उपलक्ष्य में उसने अश्वमेध पराक्रम, अप्रतिरथ, व्याघ्र पराक्रम आदि उपाधियाँ ली।

बौद्ध साक्ष्यों के अनुसार उसने वसुबंधु को अपना मंत्री नियुक्त किया था।

चन्द्रगुप्त द्वितीय :(380-412) ई० संभवतः चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपने अग्रज रामगुप्त की हत्या कर सिंहासन प्राप्त किया। विशाखदत्त के देवीचन्द्रगुप्तम्, हर्षचरित, काव्य मीमांसा श्रृंगार प्रकाश (भोज) हर्षचरित की टीका (शंकरार्य कृत) तथा मजमल-उत तवारीख (अबुल हसन अली कृत) ऐसे साहित्यिक साक्ष्य है जिनमें रामगुप्त की चर्चा मिलती है। पुरातात्विक साक्ष्यों में संजन अभिलेख, काम्बे का अभिलेख संगली का लेख तथा खंगात अभिलेख, दुर्जनपुर (विदिशा)

का लेख तथा उदयगिरि एवं भिलसा से प्राप्त रामगुप्त के ताम्र सिक्के हैं।

चन्द्रगुप्त द्वितीय की माता का नाम दत्तदेवी था।

चन्द्रगुप्त द्वितीय का दूसरा नाम देव भी था। सांची अभिलेख में उसे देवगुप्त देवराज तथा देवश्री भी कहा गया है। इसके अतिरिक्त विक्रमांक, विक्रमादित्य तथा परमभागवत भी उसकी उपाधि थी।

गुप्त शासकों में समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय तथा स्कंद गुप्त ने विक्रमादित्य की उपाधि ली थी।

अपनी राजनीतिक विजय को सुनिश्चित करने के लिये उसने वैवाहिक संबंधों का सहारा लिया। इसके तहत नागवंशीय कन्या कुबेरनागा से अपना विवाह किया जिससे संतान प्रभावती गुप्त थी।

वाकाटकों का सहयोग प्राप्त करने के लिये इसने रूद्रसेन द्वितीय से प्रभावती गुप्त का विवाह किया।

Scanned with CamScanner